लोकतंत्र पर नेहरूजी के विचार

Dr.Vini Sharma

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 मे हुआ था. भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे और स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और भारत के एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1947 से लेकर 1964 तक अपने निधन तक, भारत का सत्ता संभाली । वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य – एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, और लोकतान्त्रिक गणतन्त्र - के वास्तुकार माने जाते हैं।

"लोकतंत्र अंततोगत्वा एक जीवन पद्धति हैं, सोचने का एक ढंग है परिस्थितियों से निपटने का एक तरीका है और इन बातों को बर्दाश्त करने का तरीका है जिन्हें हम पसंद नहीं करते"

- नेहरू जी लोकतंत्र को एक गतिशील और विकासशील विचारधारा मानते थे वे लोकतंत्र को एक राजनीतिक व्यवस्था ही नहीं बल्कि नैतिक मानदंडों वह मान्यताओं का एक योजना मानते थे.

के सरकार तथा कानूनी संस्था से कुछ अधिक है
यह आवश्यक रूप से जीवन के मानदंडों तथा
मान्यताओं की एक योजना है"

वह लोकतंत्र को समाज का अनुशासन मानते थे.

- वे संसदीय लोकतंत्र के सिद्धांत व्यवहार में पूर्ण आशा रखते थे और नैतिकता को सर्वप्रथम प्राथमिकता देते थे.

- नेहरू जी हिंसा तथा सत्ता बाद से नफरत करते थे

राजनीतिक आर्थिक सामाजिक उनका विचार था
कि सही लोकतंत्र तीनों का मिश्रण है उन्होंने कहा
सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र के अभाव में
राजनीतिक लोकतंत्र का कोई महत्व नहीं रह जाता
उनका मानना था कि नागरिक को केवल
राजनीतिक स्वतंत्रता देना ही प्राप्त नहीं है बल्कि

- नेहरू जी को समाजवादी भी कहा जाता है तथा उन्हें लोकतंत्र समाजवादी भी कहा जाता है. उनका विश्वास था कि लोकतंत्र कुछ इस तरह होना चाहिए जो समाज के हर एक वर्ग का ध्यान रखें तथा हर एक वर्ग को आगे बढ़ाने का प्रयास करें तथा वह समाज के गरीब तबके को ऊपर उठाने के समर्थक थे तथा उन्हें ऐसे प्रस्तुतियां उपलब्ध कराने के समर्थक थे जिससे कि वह आगे बढ़ सके तथा उन्हें

- राष्ट्रवाद नेहरु जी का राष्ट्रवाद भी लोकतंत्र से भरपूर था वैसे यदि आप देखें तो आप पाएंगे कि राष्ट्रवाद में दो तरह के लोग होते हैं नरमपंथी तथा गर्म पंथी परंतु नेहरू जी के जो विचार थे वह राष्ट्रवाद पर लोकतंत्र वादी थे जिसके अंदर उन्हें स्वतंत्रता किसी भी प्राधीन देश पराधीन देश को चाहिए तो सबसे पहली चीज यह होती है कि उसे उग्र रूप नहीं अपनाना चाहिए तथा ऐसा करना

हम देखें तो सबसे बड़े लोकतंत्र में आस्था रखने वालों में नेहरू जी के नाम को बड़े सम्मान से लिया जाता है इसका कारण यह है कि नेहरू जी के विचार थे कि वह मानते थे कि लोकतंत्र जो है वह सर्वोत्तम जीवन की पद्धति है और इसके अंदर व्यक्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है तथा वह जीने का वह अपने जीवन व्यतीत करने का सबसे बढ़िया तरीका लोकतंत्र को मानते हैं वह मानते हैं कि प्रजातंत्र और लोकतंत्र जो है वह वास्तव में

की जंजीरों में भी था तब भी नेहरू जी का मानना
था कि सभी को आर्थिक समानता मिलनी चाहिए
उनके आर्थिक समानता का अर्थ यहां पर यह था
कि देश जो है हर एक पैसे वह हर एक संपत्ति को
इकट्ठा करें तथा लोगों में बराबर बराबर हिस्सों में
बांटे ताकि किसी को भी संपत्ति से वंचित ना रहे
क्योंकि उनका मानना था यदि हम सभी को बराबर
धन व संपत्ति का बंटवारा नहीं करेंगे तो व्यक्ति
भूखा रहकर अपने वोट देने के अधिकार का प्रयोग
नहीं कर सकता उनका मानना था कि खाली पेट
मनुष्य का सबसे बड़ा चिंता होता है इसीलिए हमें

के लोगों के बीच में बहुत ही ज्यादा खाई है.
स्वतंत्रता के समय आप देखेंगे तो उस समय भारत में जातिवाद यह सब चीजें अधिक थी जिस कारण एक समाज में बहुत बड़ा भेदभाव तक नेहरू जी का मानना था कि यह सामाजिक भेदभाव सिर्फ धर्म और जाति के हिसाब से है इसलिए उन्होंने कहा था कि सामाजिक समानता होनी चाहिए ताकि हर एक व्यक्ति समाज में समानता से रह सके तथा अपना विश्व विकास कर सके क्योंकि यदि भेदभाव

समानता न्याय यह सभी जो मूलभूत लोकतंत्र के कारण है यह सभी नष्ट हो जाएंगे यदि व्यक्ति के पास नैतिकता की कमी होगी उनका मानना था कि लोकतंत्र आत्मानुशासन से चलता है इसका अर्थ यह था कि आत्मा में अनुशासन व्यक्ति को लोकतंत्र के हर एक पहलू को खुद ही लागू करना होगा जैसे यदि समानता की बात की जाए तो व्यक्ति को खुद ही दूसरे व्यक्ति को समानता देनी होगी जब तक हम इस खुद की नैतिकता वाली भावना को नहीं जग आएंगे तब तक लोकतंत्र का सफल होना थोड़ा

विचार गांधी मार्क्सवाद के इर्द-गिर्द थे नेहरू जी का मानना था कि सभी को देश में समानता मिलनी चाहिए तथा संपत्ति आए इन सभी का सही से बंटवारा होना चाहिए क्योंकि इनका बटवारा समाज में समान होना बहुत ही आवश्यक है परंतु मार्क्सवाद में जैसा कहा गया है कि क्रांति करनी चाहिए सभी की आय समान करने के लिए या फिर समानता लाने के लिए परंतु नेहरू इन बातों का नहीं मानते और उनका मानना है कि समाजवाद होना

means (लोकतंत्र साध्य नहीं वरन साधन है)

- नेहरू जी का मानना था कि लोकतंत्र जो है उसे लागू करना जरूरी नहीं है बल्कि लोकतंत्र जो है वह यह है कि उससे हम अच्छा जीवन की आशा कर सकते हैं तथा उसका एक ही कारण होना चाहिए वह व्यक्ति के जीवन में सुधार लाना नेहरू जी लोकतंत्र को महत्व नहीं मानते बल्कि वह चीज को महत्व मानते हैं कि जिससे व्यक्ति के निजी जीवन में वह देश के निजी जीवन में एक सुधार आए.

लोकतंत्र में सबसे ज्यादा बल वैज्ञानिक पद्धति को
देते थे उनकी खुद ही इच्छा थी कि वह भारत को
वैज्ञानिक रूप से बहुत आगे ले जाए उनको विज्ञान
तथा इन सब चीजों में बहुत ही ज्यादा दिलचस्पी थी
क्या चाहते थे कि लोकतंत्र में रहते हुए भी हम
जीवन को आसान करने तथा जीवन में उच्च साधन
पानी के लिए हमें विज्ञान व तकनीक में बहुत ही

है कि वह चाहते थे कि लोकतंत्र तो आए परंतु वह समाजवादी रूप में हो जरा सर लोकतांत्रिक समाजवादी समाजवादी लोकतांत्रिक जो यह एक शब्द है यह कहीं ना कहीं नेहरू जी द्वारा उत्पन्न किया गया है जिसके अंदर उनका मानना है कि लोकतंत्र तो होना चाहिए परंतु वह ऐसा होना चाहिए जिससे हर एक व्यक्ति के सामाजिक जीवन में सुधार की संभावना हो सके ऐसा लोकतंत्र नहीं चाहते जहां पर समानता स्वतंत्रता न्याय तो हो परंतु व्यक्ति का सामाजिक जीवन बिल्कुल ही संभव या

लोकतांत्रिक तो हो साथ ही साथ समाजवाद के
मुख्य बिंदुओं का पालन करें इन सबके अलावा
नेहरू जी मार्क्सवाद से काफी प्रेरित थे समाजवादी
रूप में उनका मानना था कि मार्क्सवाद जो है वह
केवल समाज के जीवन की ही नहीं बल्कि वह देश
के वैज्ञानिक जीवन के लिए बहुत ही जरूरी है तथा
देश को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए बहुत ही
आवश्यक है परंतु वह मार्क्सवाद के आंदोलन तथा
किसी भी उग्र रूप को सपोर्ट या फिर उसे नहीं